

राज्यपाल ने 'समग्र स्वास्थ्य के विकास में योग का महत्व' विषयक संगोष्ठी
का उद्घाटन किया

लखनऊ: 21 जून, 2015

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर मानव चेतना एवं योगिक संस्थान, लखनऊ विश्वविद्यालय एवं यू०पी० नेचरोपैथी एण्ड योग टीचर्स एण्ड फिजिशियन एसोसिएशन द्वारा लखनऊ विश्वविद्यालय के मालवीय सभागार में आयोजित 'समग्र स्वास्थ्य के विकास में योग का महत्व' विषयक संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए उत्तर प्रदेश के राज्यपाल, श्री राम नाईक ने कहा कि योग प्राचीन विज्ञान है, जिसे वैज्ञानिक ढंग से लोगों तक पहुँचाना विचार का विषय है। संगोष्ठी में योग पर समग्रता से विचार होगा तो निश्चित रूप से लोगों के बीच इसकी स्वीकार्यता बढ़ेगी। पूरे विश्व में योग दिवस पूरे उत्साह और विश्वास के साथ मनाया गया है। संकल्प के साथ आगे बढ़े तो अवश्य लाभ होगा। उन्होंने विश्वास जताते हुए कहा कि योग के बारे में आमजन जितना ज्यादा समझेंगे उतना योग से जुड़ेंगे। उन्होंने कहा कि योग एक भारतीय खजाना है जिसका जन्म उत्तर प्रदेश में हुआ है।

श्री नाईक ने कहा कि स्वामी विवेकानन्द ने भारतीय विचार के आधार पर शिकागो में वसुधैव कुटुम्बकम् की जो बात रखी थी उससे भारत के प्रति विश्व का दृष्टिकोण बदल गया था। ठीक उसी प्रकार प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने विश्व पटल पर भारतीयता और योग का जो पक्ष रखा उसे 193 देशों ने स्वीकार किया जो वास्तव में ऐतिहासिक है और स्वर्ण अक्षरों में लिखने योग्य है। उन्होंने कहा कि हम गर्व कर सकते हैं कि हमने विश्व को योग दिवस दिया है।

राज्यपाल ने योग पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि शरीर स्वस्थ होता है तभी मनुष्य आगे सोचता है। जीवन कैसे स्वस्थ बने इस रूप में योग की भूमिका अप्रतिम है। सूरज की रोशनी और पर्यावरण का आपसी संबंध है। सूर्य हमें प्रकाश और जीवन देता है। सूर्य नमस्कार योग की छोटी सी विधि है। सूर्य नमस्कार के अनुभव को बताते हुए उन्होंने कहा कि वे बचपन से ही अपने विद्यालय में सूर्य नमस्कार करते थे। शायद सूर्य नमस्कार के कारण उनमें इच्छाशक्ति इतनी प्रबल हुई कि बीस वर्ष पहले हुए कैंसर पर उन्होंने जीत हासिल की।

महापौर डा० दिनेश शर्मा ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस से भारत का नाम ऊँचा हुआ है। 193 देशों में योग दिवस मनाया गया है। योग धर्म पर आधारित नहीं है बल्कि योग मानसिक सोच और समन्वय में परिवर्तन लाता है। उन्होंने कहा कि योग से मन और मस्तिष्क परिष्कृत होता है।

श्री एस०एस० उपाध्याय विधि परामर्शी श्री राज्यपाल ने कहा कि योग का तात्पर्य किसी एक को दूसरे से जोड़ना है। जीवन में सकारात्मकता का असर स्वास्थ्य पर पड़ता है। उन्होंने कहा कि योग का दार्शनिक पक्ष भी है।

कार्यक्रम में डा० राजेन्द्र प्रसाद पूर्व निदेशक, पटेल चेस्ट संस्थान, दिल्ली, प्रो० यू०एन० द्विवेदी प्रतिकुलपति लखनऊ विश्वविद्यालय सहित अन्य लोगों ने भी अपने विचार रखे।



